पाठ 18

नीड़ का निर्माण फिर फिर

(प्रस्तुत कविता में कवि ने जीवन का उल्लास और उत्साह छलक रहा है कविता द्वारा कवि के जीवन की कठिनाइयों से लड़ने और सब कुछ नष्ट हो जाने पर भी फिर से नया निर्माण करने की प्रेरणा दी है |)

नीड़ का निर्माण फिर - फिर

नेह का आह्वान फिर - फिर

बह उठी आंधी कि नभ में

छा गया सहसा अंधेरा

धूलि - धूसर बादलों ने

भूमि को इस भांति घेरा

रात सा दिन हो गया, फिर

रात आई और काली

लग रहा था अब न होगा

इस निशा का फिर सवेरा

रात के उत्पात - भय से

भीत जन-जन, भीत कण - कण

किंतु प्राची से उषा की

मोहिनी मुस्कान फिर - फिर

नीड़ का निर्माण फिर - फिर

नेह का आह्वान फिर - फिर

बह चले झोंके कि काँपे

भीम कायावान भूधर,

जड़ समेत उखड़ - पुखड़ कर,

गिर पड़े, टूटे विटप वर,

हाय तिनको से विनिर्मित

घोंसलों पर क्या न बीती

डगमगाये जबकि कंकड़

ईंट पत्थर के महल पर

बोल, आशा के विहंगम

किस जगह पर तू छिपा था,

जो गगन पर चढ़ उठाता

गर्व से निज वक्ष फिर-फिर।

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,

नेह का आह्वान फिर-फिर !

-हरिवंश राय 'बच्चन'

डा0 हरिवंश राय 'बच्चन' का जन्म 27 नवम्बर सन् 1907 ई0 को प्रयाग में हुआ। इनकी रचनाओं में 'मधुशाला', 'मधुकलश', 'निशानिमन्त्रण', 'एकान्त संगीत', 'सतरंगिणी', 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। इनका निधन 18 जनवरी सन् 2003 ई0 को मुम्बई में हो गया।

शब्दार्थ

नीड़ = चिड़ियों का घांेसला। नेह = स्नेह, प्रेम। आह्वान = आमन्त्रण, बुलाहट। भीत = भयभीत, डरा हुआ। प्राची = पूर्व दिशा। भीम कायावान भूधर = विशाल आकार वाले पहाड़। विनिर्मित = बने हुए। विहंगम = पक्षी।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. 'आशावान व्यक्ति कभी पराजित नहीं होता है' -विषय पर कक्षा में भाषण प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।

2. किसी पक्षी अथवा घोंसले का चित्र बनाइए।

विचार और कल्पना

1. जैसे चिड़िया अपना घांेसला बनाती है वैसे ही मनुष्य अपने घर बनाता है। बताइए एक घर के निर्माण में किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

2. 'आशा ही जीवन है' विषय पर 10 पंक्तियाँ लिखिए।

3. आपके जीवन में कई बार ऐसे क्षण आते होगे जब आप बहुत निराश हो जाते होंगे। विचार करें और लिखें कि निराशा के क्षणों में आप स्वयं को किस प्रकार संभालते हैं ?

कविता से

1. 'नेह का आह्वान फिर-फिर' से कवि का क्या आशय है ?

2. निराशा में आशा का संचार किस रूप में होता है ?

3. निम्नलिखित भाव किन पंक्तियों में आये हैं ? लिखिए -

(क) घोर तूफान और रात्रि के कष्टों से भयभीत जन में उषा अपनी सुनहली किरणों से नयी आशा भर देती है।

(ख) तेज आँधी के झोंकों के चलने से जब बड़े-बड़े पेड़-पर्वत काँपने लगते हैं, बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते हैं, तब तिनकों से बने हुए घांेसलों की क्या स्थिति होगी ?

4. सतत संघर्ष और निर्माण की क्रियाओं की उपमा कवि ने किससे दी है ?

5. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए।

(क) रात-सा दिन हो गया, फिर रात आयी और काली।

(ख) बोल, आशा के विहंगम किस जगह पर तू छिपा था।

भाषा की बात

1. 'धूलि धूसर बादलों ने भूमि को इस भाँति घेरा' में ध-ध और भ-भ की आवृत्ति हुई है। इससे पंक्ति में एक सरसता आ गयी है। बताइए यहाँ किस अलंकार का प्रयोग हुआ है ?

2. कविता में 'फिर-फिर', 'जन-जन' तथा 'कण-कण' (पुनरुक्त शब्द) का प्रयोग हुआ है। 'फिर-फिर' निर्माण करने की 'क्रिया' की विशेषता प्रकट कर रहा है जबकि 'जन-जन' से 'प्रत्येक जन' और 'कण-कण' से 'प्रत्येक कण' का बोध हो रहा है। इसी प्रकार नीचे लिखे पुनरुक्त शब्दों का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए -

घर-घर, क्षण-क्षण, धीरे-धीरे, भाई-भाई।

3. इस कविता को पढ़िए-

"दुख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात;

एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।

जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल;

ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।

विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान;

यही दुख-सुख-विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।"

(क) कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश से ढूँढकर लिखिए।

(ख) इस कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(ग) कविता पर अपने साथियों से पूछने के लिए प्रश्न बनाइए।

(घ) कविता को उचित शीर्षक दीजिए।

इसे भी जानें

- हरिवंश राय बच्चन की गिनती हिन्दी के लोकप्रिय कवियों में होती है।

- इनकी कृति 'दो चट्टाने' को सन् 1968 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

- भारत सरकार द्वारा सन् 1976 में आपको साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया।